⇒ सा० सर्वेक्षण एवं सा० शोध में सम्बन्ध एवं अन्तर :—

सा० सर्वेक्षण सा० तथ्यों का संकलन करता है, उन तथ्यों के आधार पर घटनाओं के कार्य-कारण सम्बन्ध को ढूंढता है, सा० सिद्धान्तों की पुर्नपरीक्षा करता है—ये सभी सा० शोध के अनिवार्य अंग हैं जिनके बिना सा० शोध की कल्पना नहीं की जा सकती। सा० सर्वेक्षण की सहायता से ही सा० शोधकर्ता अपनी प्राक्कल्पना की सत्यता की जाँच करता है।

दूसरी ओर, सा० शोध तथ्यों के संकलन की अनेक नवीन प्रविधियों की खोज कर सकता है और सा० घटनाओं के सम्बन्ध में हमारे ज्ञान को विस्तृत करता है। ये दोनो ही स्थितियाँ सा० सर्वेक्षण के लिए सहायक होती हैं। इस प्रकार एक-दूसरे के पूरक के रूप में ये दोनों कार्य करते रहते हैं।

इनके अतिरिक्त इनमें कुछ पारस्परिक सम्बन्ध निम्न प्रकार से है—(i) सा० शोध तथा सा० सर्वेक्षण दोनों ही सा० घटनाओं से सम्बन्धित तथ्यों का अध्ययन करते हैं।

(ii) दोनों का उद्देश्य सा० घटनाओं या समस्याओं के सम्बन्ध में अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करना है जिससे कि उन पर मानवीय नियन्त्रण उत्तरोत्तर बढ़ सके

(iii) दोनों में ही वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा अध्ययन किया जाता है। जैसे- साक्षात्कार, निरीक्षण, प्रश्नावली आदि प्रविधियों का दोनों ही प्रयोग करते हैं

- दोनों में ही नवीन तथ्यों की खोज की जाती है। इन्हीं समानताओं के कारण कुछ विद्वान इसे 'सर्वेक्षण शोध' नाम से भी सम्बोधित करते हैं।

⇒ इन समानताओं के बावजूद इनमें कुछ अन्तर भी दृष्टिगोचर होते हैं जिन्हें P.V. यंग आदि के विचारों के अनुसार हम इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं:—

① स. सर्वेक्षण का सम्बन्ध विशिष्ट लोगों, विशिष्ट स्थानों, विशिष्ट समाजों और परिस्थितियों से होता है, जैसे बरेली कॉलेज के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता, कानपुर के श्रमिक वर्ग का स्वास्थ्य-स्तर आदि। इसके विपरीत स. शोध का सम्बन्ध अधिक सामान्य व अधिक अमूर्त समस्याओं से होता है, जैसे औद्योगिक क्षेत्रों में बाल-अपराध का विस्तार।

② स. सर्वेक्षण का उद्देश्य किसी समस्या के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करके तथा उसका समाधान ढूंढकर तात्कालिक आवश्यकता की पूर्ति करना होता है। इसके विपरीत स. शोध का उद्देश्य दीर्घकालीन होता है और यह अपने अध्ययन-विषय के सम्बन्ध में अधिक विस्तृत तथा गहन ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करता है जिससे कि अधिक शुद्ध विचियों तथा सिद्धान्तों का निरूपण करना सम्भव हो। इस दृष्टिकोण से यह कहा जा सकता है कि स. सर्वेक्षण की प्रकृति व्यावहारिक है जबकि स. शोध की प्रकृति सैद्धान्तिक है।

③ स. सर्वेक्षण स. घटना या समस्याओं के सम्बन्ध में तथ्यों का संकलन समाज-सुधार या समाज-कल्याण के उद्देश्य से करता है जिससे कि मानव-मानव के सम्बन्ध में हमारे ज्ञान को विस्तृत करने तथा अध्ययन-प्रविधियों को उन्नत करने के उद्देश्य को सामने रखता है। हो सकता है कि यह ज्ञान अन्त में स. योजना बनाने वालों के लिए सहायक सिद्ध हो।

(4) सा० सर्वेक्षण के लिए प्राक्कल्पना की आवश्यकता नहीं होती है, किन्तु सा० शोध का आधार प्राक्कल्पना होती है। इसका कारण यह है कि सा० सर्वेक्षण में किसी समस्या से सम्बन्धित प्रत्येक आवश्यक सूचना एकत्रित करने का प्रयत्न किया जाता है जिससे कि उस समस्या के अन्तर्निहित कारणों का पता चल सके। तथ्यों का इस प्रकार संकलन करने के लिए प्राक्कल्पना की आवश्यकता नहीं होती है। इसके विपरीत सा० शोध में एक समस्या या घटना से सम्बन्धित एक प्राक्कल्पना का निर्माण पहले किया जाता है ताकि वास्तविक तथ्यों के संकलन द्वारा उस प्राक्कल्पना की सत्यता की जाँच की जा सके।

(5) सा० सर्वेक्षण का सम्बन्ध मुख्य रूप से व्यावहारिक सा० समस्याओं से होता है जबकि सा० शोध प्रत्येक सा० घटना से सम्बन्धित है।

(6) उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि सा० सर्वेक्षण में स्थूल अध्ययन और सा० शोध में सूक्ष्म अध्ययन होता है।

(7) सा० सर्वेक्षण व्यावसायिक आधार पर सम्पन्न किया जा सकता है जैसे कि कई संस्थाएँ सरकार आदि सवैतनिक कर्मचारियों से सर्वेक्षण करवाते हैं। इसे जीवन-व्यवसाय के रूप में अपनाया जा सकता है। जैसे इंग्लैण्ड ~~तथा~~ अमेरिका में अनेक सर्वेक्षण संस्थाओं का विकास हुआ है जो कि विभिन्न दलों, फर्मों या संस्थाओं के कहने पर उनकी इच्छा के अनुसार विषयों में स्वतंत्र सर्वेक्षण कर पारिश्रमिक लेती हैं। जैसे- ~~Research~~ Research Services Ltd. भारत में - Institute of ~~Pu~~ Public opinion, New Delhi; Gokhle Institute of Research Division of the Planning Commission आदि - इसके विपरीत सा० शोध व्यावसायिक आधार पर सम्पन्न नहीं कराया जा सकता है। ज्ञान-पिपासा ही शोध-कार्य के लिए आवश्यक प्रेरणा प्रदान करती है। शोध को जीवन-व्यवसाय के रूप में अपनाया नहीं जा सकता।

(4) सा० सर्वेक्षण का संगठन प्रायः एक अध्ययन-दल द्वारा होता है क्योंकि इनका अध्ययन-क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत होता है और उस विस्तृत क्षेत्र के सभी महत्वपूर्ण तथ्यों का संकलन करना प्रायः एक व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं होता। इसके विपरीत सा० शोध का संगठन व्यक्तिगत रूप में ही होता है क्योंकि विभिन्न दृष्टिकोण वाले व्यक्तियों को लेकर शोध-कार्य नहीं किया जा सकता।

परन्तु आज ये भेद कमजोर पड़ रहे हैं।

(5) आधुनिक दृष्टिकोण यह है कि सा० शोध पूर्णतया सैद्धान्तिक है यह अव्यावहारिक व अनुचित है। क्योंकि खोज किसी भी खोज का एक निश्चित सम्बन्ध लोगों की आधारभूत आवश्यकताओं तथा कल्याण से होता है।

⇒ सा० सर्वेक्षण के प्रकार → (i) वेल्स (Wells)-

- प्रचार सर्वेक्षण
- तथ्य-संकलन सर्वेक्षण
  - वैज्ञानिक
  - व्यावहारिक

(ii) हरबर्ट हाईमैन (Herbert Hyman)

- विवरणात्मक Descriptive survey
- व्याख्यात्मक सैद्धान्तिक / प्रयोगात्मक सर्वेक्षण Explanatory / Theoretical Experimental survey
  - मूल्यांकनात्मक / परियोजनात्मक Evaluative, Programmative
  - निदानात्मक Diagnostic
  - भविष्य-निर्देशक Prediction survey
  - द्वैतीयक-विश्लेषण स० Secondary Analysis

– इसके अतिरिक्त अन्य – (1) जनगणना सर्वेक्षण (Census survey)

(2) निदर्शन सर्वेक्षण (Sample survey)

(3) नियमित तथा कार्यवाहक सर्वेक्षण (Regular and Adahoc)

(4) अन्तिम और पुनरावर्तक सर्वेक्षण (Final and Repetitive survey)

(5) गुणात्मक व परिमाणात्मक सर्वेक्षण (Qualitative and Quantitative